International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070
Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 4; Issue 5; September 2018; Page No. 59-61

सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शालेय समायोजन का विज्ञान समूह के छात्र–छात्राओं की शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 महेन्द्र मणि तिवारी
पी–एच.डी. (शिक्षा), अवधेश प्रताप सिंह वि. वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शालेय समायोजन का विज्ञान समूह के छात्र–छात्राओं की शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन पर आधारित है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के व्यवहार, ज्ञान तथा विकास को सकारात्मक रूप प्रदान कर उसे समाज के अनुकूल बनाना है। शिक्षण की समस्याओं तथा विद्यार्थियों के व्यवहार के विकास से सम्बन्धित सभी समस्याओं का अध्ययन हम शैक्षिक अनुसन्धान प्रक्रिया के माध्यम से ही करते हैं। शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान समूह के छात्रों की शालेय समायोजन की औसत उपलब्धि 32.00 तथा मानक विचलन 7.14 है तथा छात्राओं की औसत उपलब्धि 31.60 तथा मानक विचलन 8.27 है। शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मूल शब्द : उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, विज्ञान समूह, शालेय समायोजन, अध्ययन।

प्रस्तावना
आधुनिक समय में शिक्षा के कार्य अथवा शैक्षिक कार्य अत्यंत व्यापक होते जा रहे हैं, जिस प्रकार मानव सभ्यता तीव्र गति से अपना विकास कर रही है, उसी प्रकार शिक्षा के कार्य भी विस्तार होता जा रहा है क्योंकि शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो कि हमें अनुसन्धान के लिए प्रेरित करती है तथा सहायता भी पहुँचाती है। वस्तुतः आज शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य एक ऐसे ज्ञान का विकास तथा प्रसारण करना है, जिसका कि मानवीय तथा व्यावहारिक पक्ष हमारी राश्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रेरणाओं पर आधारित हो, जिससे हमारे शैक्षिक कार्य, प्रयास तथा विचारधाराएँ पुर्नजीवित हो सकें। इस प्रकार से शिक्षा का प्रयास मानव तथा पृथ्वी के पदार्थों का सदुपयोग कर ऐसे उत्पादन करने से है, जो मानवीय पक्ष तथा उसे मानव की आवश्यकता के अनुरूप बनाकर तथा पृथ्वी को नकारात्मक विचारधाराओं से मुक्त करना है।

मानवीय कार्य के उपरान्त यह शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यों को शामिल किया जा सकता है–

1. किसी भी नागरिक को राश्ट्र के प्रति सम्मान करने की प्रेरणा देना शिक्षा का सर्वप्रमुख कार्य है। इसके अतिरिक्त राष्ट्र के इतिहास, उसकी धरोहर के प्रति सम्मान, राष्ट्र के महापुरुषों के प्रति सम्मान करना भी शिक्षा का अति महत्वपूर्ण कार्य है।
2. व्यक्ति को उच्च नागरिकता के कर्त्तव्यों का ज्ञान भी शिक्षा का कार्य है।
3. देश की एकता तथा अखण्डता का सम्मान करना, क्षेत्रीयता के भाव को त्यागना तथा भाषागत विभेद को त्यागना आदि तथ्य भी राष्ट्रीय शिक्षा के कार्यों में शामिल किये जाते हैं।
4. शिक्षा का कार्य मात्र ज्ञान प्रदान करना ही नहीं बल्कि हमारा समाज जिन उत्तरदायित्वों तथा कर्तव्यों को त्यागता जा रहा है, उन सभी उत्तरदायित्वों तथा कर्त्तव्यों का समाज में प्रचलन बनाये रखना भी षिक्षा का कार्य है।

शिक्षण एक स्वयं में अति विस्तृत क्षेत्र है तथा अनुसन्धान किसी समस्या के समाधान के लिए चरणबद्ध पद्धति से किया जाने वाला प्रयास है। वहीं शैक्षिक अनुसन्धान से मूल प्रश्नों का समाधान किया जा सकता है तथा इसके परिणामस्वरूप नवीन ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। निश्चय ही शैक्षिक अनुसन्धान अन्य सामाजिक तथ्यों से पृथक है क्योंकि अन्य सामाजिक विषयों के अनुसन्धान में नवीन ज्ञान की वृद्धि को ही महत्व दिया जाता है जबकि शैक्षिक अनुसन्धान में वृद्धि के साथ–साथ उसकी उपयोगिता का होना भी अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार शैक्षिक अनुसन्धान के अन्तर्गत शिक्षा के क्षेत्र में नवीन विषयों अथवा तथ्यों की खोज नवीन सिद्धांतों तथा सत्यों का क्रियान्वयन किया जाता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल सतना जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन की वर्तमान स्थिति तथा उसमें आने वाली कठिनाइयों का आंकलन किया जा सकेगा।

3. शोध की परिकल्पनायें
प्रायः प्रायः मानव तथ्यों तथा प्राथमिक अध्ययन के आधार पर समस्या के समाधानों के लिए अपना अनुमान लगाता है। मानव द्वारा लगाये गये अनुमानों को ही परिकल्पनाएँ कहा जाता है। शोध की परिकल्पनाएँ निम्नानुसार है–

"शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान समूह के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

4. उद्देश्य
अनुसन्धान का मूलभूत उद्देश्य पुराने तथ्यों का पुनः परीक्षण करके जीवन तथा घटनाओं के विशय में ज्ञान में वृद्धि तथा उनका

नवीनीकरण करना है। इस उद्देश्य में पूर्व स्थापित सिद्धांतों की जाँच तथा परीक्षण करना भी सम्मिलित है। इसमें मौलिक सिद्धांतों से सम्बन्धित अनुसन्धान किये जाते हैं। इसमें नवीन ज्ञान अर्जित करके अनुसन्धान की आवश्यकता, नवीन परिस्थितियों तथा नवीन समस्याओं के उत्पन्न होने से पड़ती है। इस उद्देश्य के परिणामस्वरूप ऐसे नये सिद्धांतों का अनुसन्धान किया जाता है, जिसके द्वारा तात्कालिक समस्या का समाधान किया जा सके। नवीन तथ्यों के विषय में सूचनाएँ तथा पुरातन तथ्यों की पुनःपरीक्षा को सम्पादित करके अनुसन्धान बौद्धिक उद्देश्य की पूर्ति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। शोध का उद्देश्य निम्नानुसार है–

- शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन का अध्ययन करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला सतना है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना (सोहावल), चित्रकूट (मझगवाँ), रामपुर बघेलान, नागौद, ऊचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैहर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय सम्मिलित होगें।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु सांख्यिकी विधि का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि

प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

सतना जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 5–5 विद्यालय कुल 40 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु लिया गया। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संवंधित हो। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विज्ञान समूह के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 5–5 छात्र–छात्राएँ कुल 200 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु लिया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृश्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विज्ञान समूह के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन का छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – कौल लोकेश (1998)[1], अग्रवाल, अनिल (2005)[2], कपिल, एच.के. (1996)[3], शर्मा, ओ.पी. (2004)[4], तिवारी, महेन्द्र मणि एवं जय सिंह (2017)[5] एवं त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016)[6].

9. शोध क्षेत्र का परिचय

भारत के हृदय स्थल में बसा मध्यप्रदेश अपने आप में विभिन्न संस्कृतियों, पुरासम्पदाओं, प्राकृतिक सौंदर्यता, अनमोल धरोहरों, धार्मिक स्थलों, अनुपम कलाकृतियों से सुसज्जित है। सतना मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी सीमा के मध्य स्थित वर्तमान रीवा संभाग का एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक एवं औद्योगिक प्रधान जिला है। जिले के उत्तर में उत्तर प्रदेश का बाँदा जिला पूर्व में रीवा एवं सीधी जिला, दक्षिण में शहडोल व जबलपुर जिला, तथा पश्चिम में पन्ना जिला स्थित है। जिला अपनी धार्मिक विरासतों, औद्योगिक संस्थानों, सांस्कृतिक ऐतिहासिक परिदृश्यों, प्रमुख वनोपज एवं खनिज के कारण सर्वोच्च शिखर पर है। जिला वीर, पराक्रमी, योद्धाओं, वीरांगनाओं, सेनानियों आदि से जाना पहचाना जाता है।

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12° – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है

परिकल्पना क्रमांक –01: "शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

तालिका 1: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन का अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन			
		छात्र		छात्राएँ	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 से ऊपर किन्तु 20 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नहीं)	3	3.00	8	8.00
2.	20 अंक से अधिक किन्तु 30 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति)	36	36.00	27	27.00
3.	30 अंक से अधिक किन्तु 40 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर)	49	49.00	54	54.00
4.	40 अंक से अधिक किन्तु 50 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर पूर्णरूप से अग्रसर)	12	12.00	11	11.00

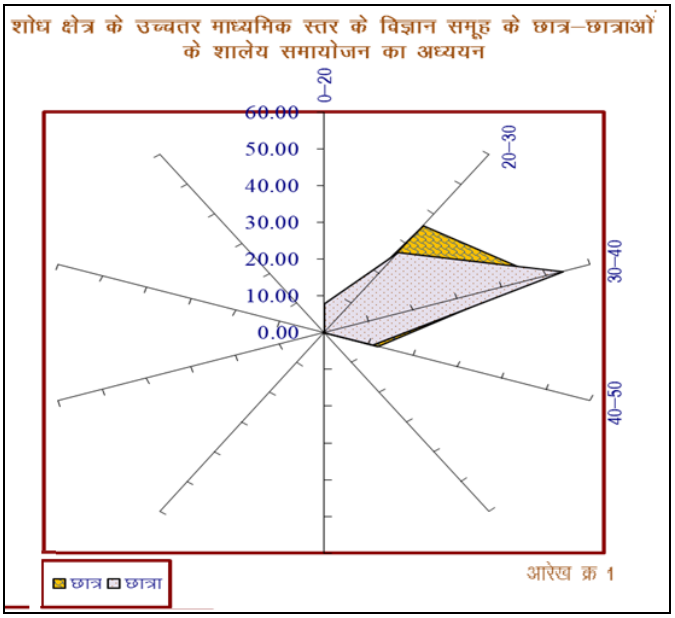

आकृति 2

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 से न्यादर्श हेतु चयनित उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान समूह में अध्ययनरत 100 छात्र एवं 100 छात्राओं का उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन सम्बंधी जानकारी का संकलन किया गया है। उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े दर्शाते है, कि शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्रों में से 6 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नही की, जबकि 32 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति कर ली है तथा 54 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर है एवं 8 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

इसी प्रकार शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्राओं में से 9 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नही की, जबकि 33 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति कर ली है तथा 52 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर है एवं 6 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

तालिका 2: सार्थकता हेतु सारणी

समूह	संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
छात्र	100	32.00	7.14	0.36
छात्राएँ	100	31.60	8.27	

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (100-1) + (100-1)$
$= 99+ 99$
$= 198$

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान समूह के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान समूह के छात्रों की शालेय समायोजन की औसत उपलब्धि 32.00 तथा मानक विचलन 7.14 है तथा छात्राओं की औसत उपलब्धि 31.60 तथा मानक विचलन 8.27 है।

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन का सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't' का मान 0.36 है। 198 d.f. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.65 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 0.36 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान समूह के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना सत्यापित

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्रों में से 6.00 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नही की, जबकि 32.00 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति कर ली है तथा 54.00 प्रतिशत छात्र उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर है एवं 8.38 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्राओं में से 9.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नही की, जबकि 33.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति कर ली है तथा 52.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर है एवं 6.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

संदर्भ

1. कौल लोकेशः शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली (1998).
2. अग्रवाल, अनिलः भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, मंथन प्रकाशन, इलाहाबाद, (2005).
3. कपिल, एच.के.: सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, (1996).
4. शर्मा, ओ.पी.: ग्रामीण क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी, प्रतियोगिता दर्पण अप्रैल (2004).
5. तिवारी, महेन्द्र मणि एवं जय सिंह : उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला समूह के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि व तार्किक योग्यता का अध्ययन, International Journal of Advanced Educational Research. 2017; 2(1):19-23.
6. त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंहः "रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Advanced Educational Research. 2016; 1(5):48-50.